



中华成语探源

张学衡

张兆飞

张兆领

编著



# 中华成语探源

张学衍 张兆飞 张兆领 编著

南京大学出版社

## 图书在版编目(CIP)数据

中华成语探源/张学衡等编著. —南京:南京大学出版社, 2001. 5

ISBN 7-305-03528-9

I. 中... II. 张... III. 汉语-成语-研究  
IV. H136. 3

中国版本图书馆 CIP 数据核字(2000)第 45935 号

书 名 中华成语探源

编 著 者 张学衡 张兆飞 张兆领

出版发行 南京大学出版社

社 址 南京市汉口路 22 号 邮编 210093

电 话 025-3596923 025-3592317 传真 025-3303347

网 址 www.njupress.com

电子函件 nupress1@public1.ptt.js.cn

经 销 全国新华书店

印 刷 南京大众新科技印刷厂

开 本 850×1168 1/32 印张 10.875 字数 282 千

版 次 2001 年 5 月第 1 版 2001 年 5 月第 1 次印刷

ISBN 7-305-03528-9/H · 262

定 价 16.50 元

---

\* 版权所有,侵权必究

\* 凡购买南大版图书,如有印装质量问题,请与所购图书销售部门联系调换

## 序

学銜同志撰写的《中华成语探源》一书，即将付梓，嘱我作序，情不能却，谨记杂感，为之共勉。

我所说的情不能却，并非是客套话。他和我曾在一个乡工作过，吃过一锅饭，共点一盏灯，管过一个片，住过一个村。相互支持，同甘共苦，完成了很多工作任务。

几十年来，我接触过很多人，有的人尽管多次交往，但留在我脑中的印象不深，而学銜同志不仅工作认真，对中华文化的探讨研究，特别是读过他编著的南京大学出版社出版的《华夏百家姓探源》，留给我终生难忘的印象。

学銜同志利用工作之余，撰写的《中华成语探源》，居然成帙，并行将问世，这为庞大的汉语言文学体系增加了内容，增添了光彩，可喜可贺。该书集文学性、知识性、可读性、适用性、趣味性于一体，对从事研究汉语成语的专家学者，具有较高的参考价值；对汉语言文学爱好者及大、中、小学生是难得的成语知识工具书，势必受广大读者欢迎和喜爱。

汉语成语，源远流长，贯通古今；涉及面广，囊括方圆，在中华语言学发展史上有它的一定地位。它随着汉语言文学的发展而不断充实，但又对汉语言文学的发展起着推动作用。因此说，这部著作将对汉语言文学的发展研究作出很大贡献。

学銜同志出身于苏北农民家庭，1959年毕业于江苏

省财经学校。40多年来一直在农村基层工作，现为中国农村经济学会会员，农村经济学研究会会员，中华诗词学会会员，盐城市农经学会理事会理事，高级经济师。由于他长期在农村工作，没有舒适的写作环境，加之农村资料短缺，常为一两个词条的“探源”，经常利用出差、开会等机会访学者、跑书店、钻图书馆，他的坚韧不拔的毅力，令人敬佩。

近二十年来，由于他爱好文学、爱好中华文化，怀着拼搏和锲而不舍的精神，先后撰写四部著作，即《华夏百家姓探源》、《神州百业祖师探源》、《中国节日探源》和这部《中华成语探源》，共有130多万字，他的这种精神，能撰写这么多书充分体现了炎黄子孙特有的高尚品质，很值得学习和赞扬。

学衡同志的成就，还说明了一个道理，任何一个人，无论干什么事，困难是难免的。但绝不能受制于环境和条件，只要有坚韧不拔的毅力，再严峻的环境，再不利的条件，也会得到改善和转化，会屈服于你。这也就是斯大林同志说过：“困难，但最有趣！”每个人都能以此作为乐趣，何愁之有？何事不成呢！

陈才人

1998年盛夏于一得斋

## 自序

汉语言文字，是我国劳动人民的伟大创造。数千年来，它作为中华灿烂文化的载体，是世界上使用、传播最广的语言文字之一。在其长期的使用过程中，形成了许多习用的、形式简洁而表意精辟的固定词组或定型短句，这就是成语。

成语语汇数量巨大，浩如烟海，它以语言精炼，意思精辟，表现力强而著称，是汉语言文字的精华，是中华民族的文化瑰宝。它随着汉语语言文字的产生而产生，亦随着汉语言文字的发展变化而不断地丰富和创新，源远流长，历久不衰，几千年来，为中华民族代代相袭，广为流传。无论在大陆还是港澳台地区，无论在亚洲各地，还是世界其他地方，只要有汉语的使用和交流，就有成语的传播。

古往今来，成语不仅机关干部、教师、工、农、商、学、兵适用，新闻、出版、编辑适用，同时，大中小学生也普遍适用。成语已成为各行各业、各条战线最基本的学习内容之一。

我撰写的《华夏百家姓探源》于1994年10月初版问世后，下决心编著一本关于成语探源的书。处处搜集第一手资料，翻阅查找50多本古书和现代出版的有关成语方面的书籍，于1995年下半年开始编写。在撰写过程中，遇到了这样那样的困难，而最大的难点，是资料的缺乏。有

的成语，有典故无人物，有的有人物而无典故。比如说“暴跳如雷”的意思是指发怒蹦跳起来，发怒时又跳又叫，像打雷一样猛烈，形容发脾气时大吼大叫的样子。但这话是谁说的呢？查了不少古书，找不出说这话的人，因为是“成语探源”，找不出人来，就探不了“源”，只好放弃。宁缺毋滥。有的成语不是出于一人之言。因为探源，则必须找出有关最早的人是谁。如“十年树木，百年树人”这一词条，语出四人，第一人，春秋初期《管子·权修》记载：“一年之计，莫如树谷；十年之计，莫如树木；终身之计，莫如树人。”第二人，明代张岱：“树人如树木。”《石匮书·一·列帝本纪》记载“问保举考选，孰为得人”，少詹事黄道周对曰：“树人如树木，须养之数十年。近来人才远不及古，况摧残之后，必深加培养。”第三人，清代梁章钜《楹联丛话·五》记载：“刚日读经，柔日读史”；“十年树木，百年树人”。第四人，清代陈确《与许芝田书本集一》记载：“仁兄优游中山，正可时时课督，以观其成。百年之计树人，殆谓此也。”

成语，每个朝代各个领域，各行各业都有。《中华成语探源》收录了黄帝的“害群之马”、“华胥梦”，毛泽东的“有的放矢”，郭沫若的“吃苦耐劳”。从最早的黄帝始，一直到当代毛泽东、郭沫若，上下历时近 5000 年。

资料的搜集涉及到时代、版本、伪书等一系列的问题。如不认真辨析，就会发生错误，如“三令五申”，据《汉语成语考释词典》介绍，语出《君文子逸文，文选三·东京赋》，而《中华成语词典》介绍语出《史记·孙子吴起传》。为了辨别真伪，又找了《成语辞海》查实。结果确认，语出

孙子为真,《文选三·东京赋》为伪。

据最近统计,我国历史记载中前前后后出现过的“成语”共有3万多条,目前实际使用的成语,只有3000条不到。历史成语不断发生变化,古老的成语不断在演变,如“过门不入”,《庄子·天下篇》记载:“尧让位给舜后,命禹治水,禹是鲧的儿子,他接受了父亲失败的教训,改用疏导的方法,依据山形地势和河流位置,全面规划水道,让水由小渠流入大川,由大川再流向大海,领导各地人民和洪水搏斗,经过了13年,才把洪水平定。《列子·杨朱》记载,禹……三过家门不入。《孟子·离娄》记载:“三过其门而不入。”对于禹为人民利益而奋斗的艰苦卓绝的可贵精神,历来人们都十分称赞,为了形容他热心工作,公而忘私的勤恳态度,现在通常用的“过门不入”,却不一定形容热心工作,也不限于自己的家门了。新的成语不断的涌现,近代语出毛泽东的“原形毕露”、“有的放矢”。语出郭沫若的“吃苦耐劳”、“畅通无阻”,就连洋洋210万字的《成语辞海》都未收入。

本书所论述的词条共530个左右,对研究成语具有一定的参考价值,有较强知识性、可读性、适用性、趣味性。本书的初稿,首先获得《盐城晚报》、《滨海报》的重视,它们分别开设《中华成语探源》专栏,《成语探源》专栏,多次连载。根据笔画的多少顺序编排。每个词条的内容分为三部分。(一)典故经过,探寻各个成语产生的朝代,典故背景的详细过程;(二)人物简介,对各个时期成语语出是谁,是哪个朝代人,家在何地,用的字、号、绰号、封号、谥号等,均作简略介绍,历任官职,略叙事迹;(三)解释大

意，交代各个成语释意。

中华成语，琳琅满目，词条浩如烟海，尽管付出许多心血和劳动，不过才探源 500 个词条，完成所有成语的 1/60，常用成语 1/6，只能说“抛砖引玉”，有待于继续拾取，继续努力。

限于本人的历史知识和水平，加之资料的缺乏，错误和不当之处，在所难免。敬请专家学者不吝赐教，并诚恳地希望广大读者提供宝贵意见，以备再版时加以修正。

张学衡

1998 年 4 月

于江苏滨海八滩镇“百忍堂”

# 目 录

|           |    |
|-----------|----|
| 一 画       |    |
| 一木难支      | 1  |
| 一见钟情      | 1  |
| 一毛不拔      | 2  |
| 一目十行      | 3  |
| 一丘之貉      | 4  |
| 一匡天下      | 5  |
| 一衣带水      | 5  |
| 一字千金      | 6  |
| 一杯黄土      | 7  |
| 一身是胆      | 7  |
| 一饭千金      | 8  |
| 一表人才      | 9  |
| 一枕黄粱      | 9  |
| 一国三公      | 10 |
| 一鸣惊人      | 11 |
| 一败涂地      | 11 |
| 一物不如,君子所耻 | 12 |
| 一往深情      | 12 |
| 一夜十起      | 13 |
| 一波未平,一波又起 | 13 |
| 一挥而成      | 14 |
| 一举两得      | 15 |
| 二 画       |    |
| 二桃杀三士     | 23 |
| 十年生聚,十年教训 | 24 |
| 十年树木,百年树人 | 25 |
| 卜昼卜夜      | 25 |
| 人为刀俎,我为鱼肉 | 26 |
| 人心如面      | 26 |
| 人头畜鸣      | 27 |
| 人自为战      | 27 |
| 人杰地灵      | 28 |
| 人面桃花      | 28 |

|            |    |            |    |
|------------|----|------------|----|
| 人微权轻       | 29 | 才占八斗       | 47 |
| 九牛一毛       | 29 | 寸草春晖       | 48 |
| 力不从心       | 30 | 上下其手       | 48 |
| 了如指掌       | 31 | 口不二价       | 49 |
| <b>三 画</b> |    | 口尚乳臭       | 50 |
| 三十六计       | 32 | 口蜜腹剑       | 50 |
| 三令五申       | 33 | 山中宰相       | 51 |
| 三迁之教       | 34 | 千万买邻       | 51 |
| 三省吾身       | 35 | 千夫所指       | 52 |
| 三思而行       | 35 | 千里送鹅毛      | 52 |
| 三顾茅庐       | 36 | 千金市骨       | 53 |
| 三朝元老       | 36 | 千金买赋       | 53 |
| 土鸡瓦犬       | 37 | 千篇一律       | 54 |
| 工力悉敌       | 37 | 丸泥封关       | 54 |
| 下车泣罪       | 38 | 亡羊补牢       | 55 |
| 下笔成章       | 38 | 之乎者也       | 55 |
| 大不敬        | 39 | 尸位素餐       | 56 |
| 大公无私       | 40 | 尸居余气       | 56 |
| 大事不糊涂      | 40 | 及瓜而代       | 57 |
| 大树将军       | 41 | 飞黄腾达       | 57 |
| 大狱一起，冤者过半  | 41 | 小时了了，大未必佳  | 58 |
| 大逆不道       | 42 | 马革裹尸       | 59 |
| 大喜过望       | 43 | <br>       |    |
| 大街小巷       | 43 | <b>四 画</b> |    |
| 大腹便便       | 44 | 开门见山       | 60 |
| 大器晚成       | 44 | 开门揖盗       | 60 |
| 万无一失       | 45 | 开卷有益       | 61 |
| 万事俱备，只欠东风  | 45 | 开源节流       | 62 |
|            |    | 天之骄子       | 63 |

|           |    |           |    |
|-----------|----|-----------|----|
| 天真烂漫      | 63 | 毛遂自荐      | 82 |
| 天堑        | 64 | 手不释卷      | 83 |
| 专横跋扈      | 64 | 长袖善舞      | 83 |
| 不入虎穴，焉得虎子 | 65 | 分庭抗礼      | 84 |
| 不可同日而语    | 66 | 风烛残年      | 85 |
| 不可多得      | 67 | 勿忘在莒      | 85 |
| 不可救药      | 67 | 月白风清      | 86 |
| 不自量力      | 68 | 鸟尽弓藏，兔死狗烹 | 86 |
| 不远千里而来    | 69 | 方士已乱      | 87 |
| 不违农时      | 69 | 心旷神怡      | 87 |
| 不求甚解      | 70 | 以发代首      | 88 |
| 不弃糟糠      | 70 | 双管齐下      | 88 |
| 不学无术      | 71 | 水到渠成      | 89 |
| 不胫而走      | 72 |           |    |
| 不觉技痒      | 72 |           |    |
| 不耻下问      | 73 | 五 画       |    |
| 不逞之徒      | 74 | 玉不琢，不成器   | 90 |
| 不教而诛      | 74 | 玉石俱焚      | 90 |
| 不寒而栗      | 75 | 去恶务尽      | 91 |
| 不辨菽麦      | 76 | 巧夺天工      | 91 |
| 匹夫之勇      | 76 | 功垂竹帛      | 92 |
| 比肩接踵      | 77 | 甘棠遗爱      | 92 |
| 车水马龙      | 78 | 世外桃源      | 93 |
| 车载斗量      | 78 | 古今一人      | 94 |
| 日近长安远     | 79 | 厉兵秣马      | 95 |
| 日理万机      | 80 | 龙盘虎踞      | 95 |
| 见异思迁      | 80 | 平原十日饮     | 96 |
| 牛山下涕      | 81 | 灭此朝食      | 96 |
| 牛角挂书      | 81 | 东山再起      | 97 |
|           |    | 东施效颦      | 97 |

|           |     |        |     |
|-----------|-----|--------|-----|
| 东家之丘      | 98  | 出生入死   | 113 |
| 东道主       | 99  | 出尔反尔   | 113 |
| 业精于勤      | 99  | 出将入相   | 114 |
| 归马放牛      | 100 | 出淤泥而不染 | 115 |
| 叶公好龙      | 100 | 发短心长   | 115 |
| 叶落归根      | 101 | 对牛弹琴   | 115 |
| 目不识丁      | 101 |        |     |
| 四海之内皆兄弟   | 102 |        |     |
| 四海为家      | 102 | 吉日良辰   | 116 |
| 四海楚歌      | 103 | 老马识途   | 117 |
| 白云亲舍      | 104 | 老死不相往来 | 118 |
| 白鱼入舟      | 104 | 老妪能解   | 118 |
| 白驹过隙      | 105 | 耳闻不如目见 | 119 |
| 白面书生      | 105 | 朽木难雕   | 119 |
| 白首空归      | 106 | 臣心如水   | 120 |
| 白璧微瑕      | 106 | 百年大计   | 120 |
| 皮里阳秋      | 107 | 百身可赎   | 121 |
| 皮相之士      | 107 | 百废具兴   | 121 |
| 外强中干      | 108 | 百战百胜   | 121 |
| 处心积虑      | 108 | 百闻不如一见 | 122 |
| 尔虞我诈      | 109 | 有志者事竟成 | 122 |
| 乐不可支      | 109 | 有的放矢   | 123 |
| 乐不思蜀      | 110 | 有恃无恐   | 124 |
| 乐此不疲      | 110 | 而立之年   | 124 |
| 半部《论语》    | 111 | 夺锦袍    | 125 |
| 宁我负人，毋人负我 | 111 | 死不旋踵   | 125 |
| 永垂不朽      | 112 | 死灰复燃   | 126 |
| 民为邦本      | 112 | 死里逃生   | 126 |
| 民以食为天     | 112 | 扬汤止沸   | 127 |

## 六 画

|           |     |            |     |
|-----------|-----|------------|-----|
| 过门不入      | 128 | 后顾之忧       | 147 |
| 同功一体      | 129 | 舟中敌国       | 148 |
| 同病相怜      | 130 | 全无心肝       | 149 |
| 回天之力      | 130 | 合浦还珠       | 149 |
| 网开三面      | 131 | 众怒难犯       | 150 |
| 吐故纳新      | 131 | 名列前茅       | 150 |
| 吐哺握发      | 132 | 名落孙山       | 151 |
| 吃苦耐劳      | 132 | 多多益善       | 152 |
| 曲高和寡      | 133 | 多难兴邦       | 152 |
| 岁寒知松柏     | 133 | 各自为政       | 153 |
| 竹头木屑      | 134 | 争名于朝，争利于市  | 153 |
| 先入为主      | 135 | 冰冻三尺，非一日之寒 | 154 |
| 先见之明      | 136 | 齐大非偶       | 154 |
| 先发制人      | 136 | 闭门造车       | 155 |
| 成也萧何，败也萧何 | 137 | 米珠薪桂       | 155 |
| 休戚相关      | 138 | 州官放火       | 156 |
| 价重连城      | 139 | 汗马功劳       | 156 |
| 华而不实      | 140 | 安步当车       | 157 |
| 华封三祝      | 141 | 安居乐业       | 158 |
| 华胥梦       | 141 | 寻章摘句       | 159 |
| 仰人鼻息      | 142 | 如火如荼       | 159 |
| 伪游云梦      | 142 | 如鱼得水       | 160 |
| 似是而非      | 143 | 如嚼鸡肋       | 160 |
| 自怨自艾      | 144 | 妇人之仁       | 161 |
| 自暴自弃      | 144 | 羽毛未丰       | 161 |
| 向平之愿      | 145 | 羽翼已成       | 162 |
| 后生可畏      | 145 |            |     |
| 后来居上      | 146 |            |     |
| 后起之秀      | 146 | 运筹帷幄       | 162 |

## 七 画

|           |     |         |     |
|-----------|-----|---------|-----|
| 赤膊上阵      | 163 | 庐山真面目   | 180 |
| 志在四方      | 163 | 快刀斩乱麻   | 180 |
| 声东击西      | 164 | 沧海一粟    | 181 |
| 劳苦功高      | 164 | 完璧归赵    | 182 |
| 克己奉公      | 165 | 识时务者为俊杰 | 182 |
| 巫山云雨      | 165 | 补天浴日    | 183 |
| 吾貌虽瘦，天下必肥 | 166 | 初生牛犊    | 184 |
| 两败俱伤      | 167 | 初出茅庐    | 184 |
| 投笔从戎      | 167 | 尾大不掉    | 186 |
| 求田问舍      | 168 | 张敞画眉    | 186 |
| 步步生莲      | 168 | 改过自新    | 187 |
| 坚壁清野      | 169 | 阿斗      | 187 |
| 围魏救赵      | 169 | 坚履      | 188 |
| 吴牛喘月      | 170 | 鸡毛蒜皮    | 189 |
| 别开生面      | 171 | 鸡鸣狗盗    | 189 |
| 别无长物      | 171 | 纲举目张    | 190 |
| 别有天地      | 172 | 纸上谈兵    | 191 |
| 旱苗得雨      | 173 | 八 画     |     |
| 乱首垢面      | 173 | 玩物丧志    | 192 |
| 每况愈下      | 174 | 青出于蓝    | 192 |
| 作法自毙      | 175 | 幸灾乐祸    | 193 |
| 伯仁由我      | 175 | 画龙点睛    | 194 |
| 兵不血刃      | 176 | 画饼充饥    | 194 |
| 身在营中心在汉   | 177 | 画蛇添足    | 195 |
| 近水楼台      | 177 | 卧薪尝胆    | 196 |
| 坐山观虎斗     | 178 | 奇货可居    | 196 |
| 坐享其成      | 178 | 拔山举鼎    | 197 |
| 言过其实      | 179 | 抱佛脚     | 198 |
| 言听计从      | 179 |         |     |

|           |     |         |     |
|-----------|-----|---------|-----|
| 抱瓷灌畦      | 198 | 空城计     | 217 |
| 抱薪救火      | 199 | 诚心诚意    | 217 |
| 披荆斩棘      | 200 | 郎潜发白    | 218 |
| 招摇过市      | 200 | 房谋杜断    | 218 |
| 非异人任      | 201 | 姗姗来迟    | 219 |
| 虎口余生      | 201 | 孤注一掷    | 219 |
| 虎踞龙盘      | 202 | 九 画     |     |
| 国色天香      | 203 | 赴汤蹈火    | 220 |
| 明目张胆      | 203 | 草木知名    | 221 |
| 明察秋毫      | 204 | 草木皆兵    | 222 |
| 畅通无阻      | 204 | 草菅人命    | 223 |
| 败军之将，不敢言勇 | 205 | 带厉河山    | 223 |
| 垂帘听政      | 206 | 相见恨晚    | 224 |
| 知彼知己      | 206 | 树倒猢狲散   | 224 |
| 知音        | 207 | 面折廷争    | 225 |
| 和氏之璧      | 208 | 挟天子以令诸侯 | 225 |
| 侏儒饱死      | 209 | 指鹿为马    | 226 |
| 依样画葫芦     | 210 | 按图索骥    | 227 |
| 金屋藏娇      | 211 | 背城借一    | 228 |
| 金匱石室      | 211 | 背道而驰    | 228 |
| 贪天之功      | 211 | 临危不惧    | 228 |
| 周游列国      | 212 | 临渊羡鱼    | 229 |
| 狐假虎威      | 213 | 临渴掘井    | 230 |
| 夜以继日      | 213 | 哄堂大笑    | 230 |
| 夜郎自大      | 214 | 星火燎原    | 231 |
| 夜深人静      | 214 | 冒天下之大不韪 | 232 |
| 沾沾自喜      | 215 | 畏首畏尾    | 232 |
| 实事求是      | 216 | 钩心斗角    | 233 |
| 实逼处此      | 216 |         |     |

|      |     |       |     |
|------|-----|-------|-----|
| 秋扇见捐 | 233 | 班荆道故  | 248 |
| 重厚少文 | 234 | 起死回生  | 249 |
| 便宜行事 | 234 | 莫乱王法  | 250 |
| 侯门如海 | 235 | 桃李不言  | 250 |
| 食少事烦 | 235 | 桃李满天下 | 251 |
| 食言而肥 | 236 | 唇亡齿寒  | 252 |
| 独当一面 | 236 | 破天荒   | 252 |
| 哀兵必胜 | 237 | 破釜沉舟  | 253 |
| 亲痛仇快 | 237 | 破镜重圆  | 253 |
| 差强人意 | 238 | 破瓶不顾  | 254 |
| 养虎遗患 | 239 | 逐客令   | 255 |
| 迷途知返 | 239 | 捕风捉影  | 256 |
| 前无古人 | 240 | 乘风破浪  | 257 |
| 逆取顺守 | 240 | 笑里藏刀  | 257 |
| 洞见症结 | 241 | 债台高筑  | 258 |
| 染指   | 242 | 倾城倾国  | 259 |
| 洛阳纸贵 | 242 | 射钩拜相  | 259 |
| 浑水摸鱼 | 243 | 爱屋及乌  | 260 |
| 举足轻重 | 243 | 豹死留皮  | 260 |
| 误付洪乔 | 244 | 脍炙人口  | 261 |
| 骄兵必败 | 244 | 胸有成竹  | 261 |
| 骄奢淫逸 | 245 | 高阳酒徒  | 262 |
| 结草之报 | 245 | 高枕无忧  | 262 |
| 绝口不谈 | 246 | 高朋满座  | 263 |
| 绝缨   | 246 | 高屋建瓴  | 264 |
| 十 画  |     | 高唱入云  | 265 |
| 耕前锄后 | 247 | 席不暇暖  | 266 |
| 班门弄斧 | 247 | 病入膏肓  | 266 |
|      |     | 疾风知劲草 | 267 |